-: पाँचवा अध्याय :-

उपसंहार

पाँचवा अध्याय

उपसंहार

मेरे लघु शोध-प्रबन्ध का विषय है -- " नंददास के भँवरगीत की गोपियाँ " ।

मध्ययुगीन भक्ति परंपरा के अनेक श्रेष्ठ भक्त-कवियों में नंददासजी का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है । अष्टछाप के श्रेष्ठ कवियों में नंददासजी की गणना की जाती है । ब्रजभाषा का साहित्यिक गौरव बढानेवाले कवियों में उनका स्थान अग्रगण्य है । नंददासजी का ` भँवरगीत ` हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण कृति है । उन्होंने अपने ` भँवरगीत ` के माध्यम से गोपियों का चित्रण अत्यंत आकर्षक रूप में किया है । नंददास की गोपियाँ रस-रूप कृष्ण की आनंद - प्रसारिणी शक्तियाँ हैं । पूर्ण पुरुषोत्तम कृष्ण का रस-रूप इन शक्तियों के बिना अधूरा है । गोपियों के विरह व्याकुल हृदय से जो वाणी निकली वह प्रशंसनीय है । गोपियों का अपने आराध्य के प्रति भक्ति-भाव भी वंदनीय है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध लिखने से पहले मेरे मन में जो प्रश्न उत्पन्न हुए थे उनका समाधान उपसंहार में देने की मैंने कोशिश की है ।

इस लघु शोध-प्रबन्ध के ` प्रथम अध्याय ` में मैंने नंददासजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया है । इसमें मैंने अन्य अनेक उपलब्ध समीक्षा ग्रंथों का आधार लेकर उनकी प्रामाणिक जीवनी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है । वैसे देखा जाए तो भक्तिकाल के कवियों ने अपने व्यक्तित्व के बारेमें कहीं उल्लेख नहीं किया है । वे नाम के भूखे बिलकुल नहीं थे । भगवान की भक्ति में तल्लीन रहना

ही उनके लिए सब कुछ था । फिर भी अंत:साक्ष्य और बहि:साक्ष्य के आधार पर उनकी प्रामाणिक जीवनी का विवेचन किया गया है । नंददासजी की जन्मतिथि सं. १५९० मानी है । उनका जन्म रामपुर नामक ग्राम में हुआ है । उन्हें शुक्ल आस्पदवाले सनाढय ब्राह्मण कुल का माना है । तुलसीदास उनके चचेरे भाई थे । नृसिंह पंडित नंददासजी के शिक्षा गुरु थे और वल्लभसुत विठ्ठलनाथ उनके दीक्षा गुरु थे । नंददासजी का विवाह कमला नामक स्त्री से हुआ था और उनके कृष्णदास नाम का एक पुत्र भी था । नंददासजी की मृत्यु सं. १६४२ के पूर्व मानी जाती है ।

नंददासजी के व्यक्तित्व को देखने पर वे स्वच्छंदप्रिय, रसिक, भावुक, तार्किक तथा प्रतिभासंपन्न हैं यह लक्षित होता है । किसी के बंधन में रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता था । सिंहनद की क्षत्राणी के रूप पर मुग्ध होकर उसके पीछे-पीछे जाना यह उनकी रसिकता का ही लक्षण है । नंददासजी के `भँवरगीत` में उनकी तार्किकता स्पष्टता से दिखाई देती है । ब्रजभाषा के साथ-साथ उन्होंने संस्कृत का भी काफी अध्ययन किया था । वे अध्ययनशील, एक महान विद्वान तथा पंडित थे ।

नंददास कृष्ण-भक्त कवि थे । उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से कृष्ण से संबंधित अनेक लीलाओं को अभिव्यक्ति दी है । उनकी सभी कृतियों को देखने से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वे एक बहुमुखी काव्य-प्रतिभा के कवि थे । नंददासजी के काव्य में भाव-पक्ष और कला-पक्ष का सुन्दर समन्वय हुआ है । उनका सिद्धांत - निरूपण, रास-लीला, प्रकृति - वर्णन, गोपी-चित्रण आदि अत्यंत आकर्षक बन गया है ।

`द्वितीय अध्याय` में मैंने हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत परंपरा के उद्भव और विकास का वर्णन किया है । `भ्रमरगीत` याने भ्रमर को संबोधित कर गाया हुआ गीत । इसमें कवियों ने भ्रमर को प्रतीक मानकर अपने भाव प्रकट किये हैं । भ्रमरगीत के लिए अनेक कवियों ने `श्रीमद्भागवत` के दशमस्कंध का आधार लिया है । विरह में तडपती हुई गोपियों का सांत्वन करने के लिए कृष्ण अपने सखा

उद्धव को मथुरा से गोकुल भेजते हैं । कृष्ण के वियोग में दुःखी गोपियाँ अपने प्रिय सखा द्वारा आया संदेश सुनने को उत्सुक होती हैं, परंतु उद्धव के मुख से निर्गुण ब्रह्म का संदेश सुनकर वे निराश हो जाती हैं । भ्रमरगीत में गोपियों के विरह-वर्णन के साथ-साथ सगुण-निर्गुण की चर्चा भी की गई हैं । उस काल में सगुण-निर्गुण में बड़ा विवाद चल रहा था । निर्गुण ब्रह्म की क्लिष्ट, कष्टसाध्य बातें साधारण जनता की समझ में नहीं आती थीं । इसकारण सूरदास, नंददास आदि भ्रमरगीतकारों ने अपने भ्रमरगीत के माध्यम से सगुण की निर्गुण पर तथा प्रेम और भक्ति की ज्ञान, योग, कर्म पर विजय दिखाई है ।

भ्रमरगीत का यह विषय सभी कालों में प्रसिद्ध रहा है । भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक कवियों ने भ्रमरगीत पर लिखा है । इन कवियों ने अपनी प्रतिभाशक्ति के आधार पर इसमें समय-समय पर परिवर्तन भी किये हैं । इसके माध्यम से अनेक सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न भी हो रहा है । सूरदासजी इस परिपाटी के प्रमुख कवि हैं । उन्होंने अपने `सूरसागर` में भ्रमरगीत की सुन्दर रचना की है । इसमें भागवत के प्रत्येक प्रसंग को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित करने का प्रयत्न किया है ।

सूरदासजी के बाद भ्रमरगीत परंपरा में नंददासजी का नाम महत्वपूर्ण माना जाता है । नंददासजी ने भागवत की तुलना में बहुत परिवर्तन किये हैं । इस रचना के उद्देश्य भी भागवत के भ्रमरगीत प्रसंग के उद्देश्यों से भिन्न हैं । भागवत में विरहिणी गोपियाँ कृष्ण का उद्धव द्वारा प्राप्त ज्ञान का संदेश सुनकर शांत होती हैं । नंददास के `भँवरगीत` की गोपियाँ निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देनेवाले उद्धव को अपने तर्कों के माध्यम से पराजित करती हैं । अंत में उद्धव को प्रेमी भक्त बनाकर मथुरा भेजती हैं ।

मेरे लघु शोध-प्रबन्ध का `तृतीय अध्याय` है -- `नंददास का भँवरगीत - परिचय` ।

नंददासजी ने केवल ७५ पदों में अपने भावों को प्रकट करने का प्रयत्न किया है । सूरदास आदि की तरह उन्होंने `श्रीमद्भागवत` के ४६ वें और ४७ वें

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

अध्याय का आधार न लेकर सिर्फ ४७ वें अध्याय का ही आधार लिया है। `भागवत` का आधार लेते हुए भी कवि ने इसका मात्र अनुवाद नहीं किया है।

सूरदास के लघु भ्रमरगीत की तरह नंददासजी ने भी उद्धव के ब्रज-आगमन, श्रीकृष्ण - संदेश, राधा-यशोदा-नंद का विरह आदि प्रसंगों के बारेमें न कहते हुए उद्धव की वाणी से ही अपने `भँवरगीत` का प्रारंभ किया है। ४६ वें अध्याय की कथा को उन्होंने हाथ तक नहीं लगाया है।

गोपियों का विरह दूर करने के लिए कृष्ण उद्धव को गोकुल भेजते हैं। उद्धव गोपियों की प्रशंसा करते हुए अपनी ओर आकर्षित करते हैं। गोपियाँ उद्धव का आदर से स्वागत-सत्कार करती हैं। उद्धव अपने आने का प्रयोजन बताते हैं। उद्धव के मुख से अपने प्यारे कृष्ण का नाम सुनते ही गोपियाँ सब कुछ भूल गईं। प्रेमानंद से उनका हृदय इतना भर उठा कि उनके सर्वांग पुलकित हो गये। आँखों में आँसू भर आये। वाणी इतनी गद्गद हो उठी कि वे बोल तक न सकीं। बाद में उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का संदेश देते हैं। वे कहते हैं कि सृष्टि के कण-कण में भगवान व्याप्त हैं, ज्ञान की आँखों से देखने पर वे सभी को दिखाई देते हैं। ब्रह्म निराकार तथा निर्विकार हैं। उनके माता-पिता आदि कोई नहीं हैं। लीला के लिए उन्होंने यह रूप धारण किया है। उनका यह भेद कोई नहीं जानता। अगर कृष्ण की प्राप्ति करनी है तो ज्ञान, योग और कर्म के द्वारा अपनी आत्मा निर्गुण ब्रह्म में लीन करो।

उद्धव का यह उपदेश सुनकर गोपियाँ चौंक गईं। वे कहती हैं `हमारी समझ में ये निर्गुण ब्रह्म की बातें नहीं आतीं। कृष्ण ने तो पहले ही हमारा चित्त चुरा लिया है। हमारा यह प्रेम-मार्ग अत्यंत सरल है। प्यारे कृष्ण हमारे तन, मन, वचन में समाये हुए हैं। ऐसे कृष्ण को छोडकर निर्गुण ब्रह्म की उपासना करना अमृत को छोडकर धूल समेटने जैसा लगता है। हम लोग कर्म-धर्म की बात नहीं जानतीं। गोपियों का कहना है कि जब तक हृदय में हरि का निवास नहीं है तब तक कर्मों की आवश्यकता है। कर्म किसी भी प्रकार का हो,

वह तो एक बंधन ही होता है। प्रेम के बिना सब कुछ व्यर्थ है। प्रेम को जानने के लिए प्रेम-दृष्टि की आवश्यकता है।

इस दार्शनिक वाद-विवाद के बाद भी उद्धव जब सगुण ब्रह्म मानने के लिए तैयार नहीं होते तब गोपियाँ उद्धव को नास्तिक कहकर मुँह मोड लेती हैं। इसके बाद नंददासजी ने गोपियों का विरह चित्रित किया है। गोपियाँ भावजगत् में मानसिक-मिलन द्वारा कृष्ण से वार्तालाप करने लगती हैं। इस मानसिक मिलन से भी उनका समाधान नहीं होता। वे कृष्ण की मुरली का मधुर संगीत सुनना चाहती हैं। कृष्ण के बिना उनकी हालत पानी के बिना तडपती हुई मछली के समान बन गई है। फिर गोपियाँ कृष्ण को नाना प्रकार से उपालंभ देने लगीं। इसमें वे कृष्ण की निष्ठुरता तथा विभिन्न अवतारों-राम, परशुराम, वामन, नृसिंह आदि पर भी व्यंग्य करती हैं। कृष्ण के प्यार में व्याकुल गोपियाँ अत्यंत भावुक बनकर सर्वत्र प्रियतम कृष्ण के ही रूप देखने लगीं। गोपियों का यह प्रेम देखकर उद्धव का ज्ञान-गर्व दूर हो गया। ये गोपियाँ उन्हें वंदना करने योग्य लगती हैं। इतना ही नहीं तो वे गोपियों की चरण-धूलि की कामना करने लगे। बाद में वे गोपियों को प्रसन्न कराने की दृष्टि से विचार करने लगे।

उद्धव जब इस प्रकार सोच रहे थे, उसी क्षण एक भौंरा उडता हुआ वहाँ आ पहुँचा। वह गोपियों के चरणों पर बैठ गया। उस भ्रमर को कृष्ण का प्रतिरूप मानकर गोपियाँ उसके बहाने कृष्ण, उद्धव और कुब्जा पर व्यंग्य करने लगीं, परंतु इससे गोपियों के हृदय को सच्ची शांति नहीं मिलती। वे फूट-फूटकर रोने लगीं। इन आँसुओं में उनके हार भीग गये। हृदय का सारा दुःख आँखों के रास्ते निकल पडा।

इस प्यार को देखकर उद्धव भी बह चले। जो उद्धव ज्ञान, योग, कर्म का संदेश देने आये थे, वे प्रेमी भक्त बन गये। गोपियों के दर्शन से वे अपना जीवन धन्य मानने लगे। ज्ञान-योग से वे अब प्रेम को श्रेष्ठ कहते हैं। गोपियों के प्यार की प्रशंसा करते हुए ब्रज के तृण, लता, गुल्म बनकर रहने की इच्छा प्रकट करते हैं। मथुरा वापस लौट आने पर वे कृष्ण का गुणगान भूलकर गोपियों का

गुणगान करने लगे । वे कृष्ण से वृंदावन जाकर रहने की विनती करते हैं । उद्धव की ये बातें सुनकर कृष्ण की आँखों में पानी भर आया । कृष्ण के रोम-रोम में गोपियाँ मूर्तिमान हो गईं । कृष्ण कहते हैं - "मुझमें और गोपियों में कण-भर भी अंतर नहीं है । जल और तरंग का जैसे नाता है, वैसा ही नाता मुझमें और गोपियों में है ।" इसके बाद उन्होंने अपने शरीर में एक-एक गोपी को प्रकट करके दिखा दिया और उद्धव के भ्रम को दूर कर दिया ।

`भँवरगीत` में नंददासजी ने अपने दार्शनिक विचारों का भी सुन्दर विवेचन किया है । उनका दार्शनिक पक्ष वल्लभ-संप्रदाय के सिद्धांतों से प्रभावित है । नंददास वल्लभ-संप्रदाय में दीक्षित हुये थे । इसकारण उन पर पुष्टिमार्गीय भक्ति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । ब्रह्म, जीव, जगत्, माया, मोक्ष आदि विचारों को नंददासजी ने सुन्दर अभिव्यक्ति दी है । उनका यह दार्शनिक विवेचन तर्क पद्धति पर आधारित है ।

नंददास के `भँवरगीत` का कलापक्ष भी अत्यंत सशक्त बन पडा है । नंददासजी की भाषा का लालित्य देखकर `आन कवि गढिया - नंददास जडिया` यह उक्ति अत्यंत सार्थक लगती है । ब्रजभाषा के गौरव में नंददासजी का महत्व अविस्मरणीय है । ब्रजभाषा को जडने का काम उन्होंने किया है । भाषा पर नंददासजी का अपूर्व अधिकार था । भावों के अनुसार भाषा की अभिव्यक्ति सक्षम बनी है । छंद, अलंकार, शब्द-शक्तियाँ, नाद-माधुर्य, संगीतात्मकता आदि को देखने पर उनका कलाकार का रूप अपने आप ही सामने आ जाता है ।

इसप्रकार नंददासजी के `भँवरगीत` में भाव पक्ष और कला पक्ष का सुन्दर समन्वय हुआ है ।

`चतुर्थ अध्याय` में मैंने नंददासजी के `भँवरगीत` की गोपियों का विभिन्न रूपों में विस्तृत विवेचन किया है । नंददासजी का `भँवरगीत` आकार से छोटा होने के कारण इसमें नंद, यशोदा, राधा, ग्वाल आदि का वर्णन नहीं किया है तो सिर्फ गोपियों के चित्रण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है ।

नंददासजी की गोपियों का व्यक्तित्व पूर्णत: निखर उठा है । ये गोपियाँ मात्र भावुक तथा भोली-भाली नहीं हैं, तो वे बड़ी तार्किक हैं । तार्किकता इन गोपियों की सब से महत्वपूर्ण विशेषता है । ये गोपियाँ बुद्धिमानी, परम विदुषी तथा पंडिता हैं । गोपियों के तर्क बहुत ही सुन्दर बन पड़े हैं । वे एक के बाद एक सुन्दर तर्क प्रस्तुत करती जाती हैं । उद्धव जैसे ज्ञानी की प्रत्येक बात का वे खण्डन करती हैं । गोपियाँ अपने तर्कों के माध्यम से उद्धव को निरुत्तर कर देती हैं । उनका कहना है कि कर्म के साथ फल की आशा लगी रहने के कारण यह मार्ग निरर्थक है, इसलिए भगवान की प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग प्रेम ही है । गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम देखकर जो उद्धव ज्ञान और कर्म का उपदेश देने गये थे, वे प्रेमी भक्त बनकर मथुरा वापस लौट आते हैं । नंददासजी ने अपनी गोपियों के माध्यम से निर्गुण - निराकार स्वरूप का खण्डन कर सगुण-साकार रूप की प्रतिष्ठा की है ।

नंददासजी के ' भँवरगीत ' की गोपियाँ पुष्टिमार्ग का समर्थन करती हैं । उनकी तन्मयतापूर्ण प्रेमासक्ति ही आदर्श है । इस पुष्टि भक्ति के लिए आश्रय गोपियाँ हैं और आलंबन उनके प्राण-प्रिय श्रीकृष्ण हैं । गोपियों की यह भक्ति शास्त्र तथा ज्ञान पर आधारित नहीं है वरन वह प्रेम पर आधारित है । गोपियाँ इस प्रेमाभक्ति की साकार मूर्तियाँ हैं । पुष्टि मार्ग की भक्ति में लोक-वेद-कुल की मर्यादा को पीछे छोड़ दिया जाता है । गोपियों ने भी 'भँवरगीत' में यही भाव निभाया है । पुष्टिमार्गी भक्ति के मूल में जो आत्मसमर्पण-भाव तथा अनन्य भाव निहित है, वह अन्य किसी भक्ति-पद्धति में नहीं । गोपियाँ कृष्ण की अनन्य उपासिका थी । गोपियों के लिए कृष्ण-प्रेम ही सब कुछ था । गोपियों ने लोक-लाज और समाज की उपेक्षा कर अनन्य भाव से अपने प्यारे कृष्ण को सर्वस्व अर्पण किया । इसमें गोपियों के प्रेमी हृदय की ही मार्मिक व्यंजना हुई है, जिससे उनके प्रेम की विवशता, उत्कटता, भोलापन लक्षित होता है । अपने प्रेम के सरल-सुखद मार्ग के सामने उन्हें योग और ज्ञान का मार्ग कपटपूर्ण लगता है ।

नंददासजी की गोपियाँ सर्वगुण संपन्न हैं। वे रूप,गुण,शील से युक्त तथा सभी गुणों की खान हैं। वे प्रेम का गौरव बढ़ानेवाली, प्रेम का आदर्श ऊँचा करनेवाली तथा सभी ओर आनंद फैलानेवाली हैं। वे उद्धव का उचित आतिथ्य एवं सत्कार करके ब्रज-प्रदेश की परंपरा का पालन करती हुई दिखाई देती हैं।

'भँवरगीत' शृंगार रस के अंतर्गत विरह शृंगार का उत्तम नमूना है। गोपियों का यह विरह श्रीकृष्ण के मथुरा प्रवास के कारण हुआ है। गोपियाँ कुब्जा के श्रीकृष्ण - प्रेम के कारण मान करती हैं। विरह शृंगार के अंतर्गत उपालंभ एवं व्यंग्य को अत्यंत महत्व रहता है। ईर्ष्या, विरह एवं विवशता के कारण उपालंभ एवं व्यंग्य की उत्पत्ति होती है। गोपियों ने भी व्यंग्य और उपालंभ का प्रयोग करते हुए अपने भावों को उत्कटता से प्रकट करने का प्रयत्न किया है। जो भाव साधारण वार्तालाप द्वारा व्यक्त नहीं किये जा सकते, उन्हें व्यंग्य के द्वारा बड़ी सरलता से प्रकट किया जाता है। फलत: गोपियों का विरह संस्मरणीय बन गया है। उनके व्यंग्यबाणों तथा उपालंभों से उनका एकनिष्ठ प्रेम ही दिखाई देता है। एक ओर गोपियाँ कृष्ण को उपालंभ देती हैं; परंतु दूसरी ओर कृष्ण-वियोग के कारण फूट-फूटकर रोने लगती हैं। गोपियाँ उद्धव के उथले ज्ञान की हँसी उड़ाकर कृष्ण तथा कुब्जा पर व्यंग्य करती हैं। कुब्जा के प्रति सपत्नी भाव से जलती हुई श्रीकृष्ण के रूप,गुण आदि के संबंध में कटु बातें कहती हैं। कुब्जा के प्रति गोपियों के व्यंग्य मार्मिक तथा तीखे बन गये हैं। वे सीधे मर्मस्थल पर चोट करते हैं। इसमें भी गोपियों का आत्मपीडन व्यक्त हुआ है।

काव्यशास्त्र की दृष्टि से गोपियों में विरह की सभी दशाओं का चित्रण हुआ है, जिसमें कृष्ण-भक्तों की अध्यात्मिक विरहानुभूति के दर्शन होते हैं। इसमें बुद्धि पक्ष और हृदय पक्ष का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है।

नंददासजी की गोपियों में नारी-सुलभ भावप्रवणता भी भरी हुई है। कृष्ण का नाम सुनते ही उनका हृदय प्रेमानंद से भर जाता है। ये गोपियाँ

कृष्ण की प्रेमिका होने पर भी सबसे प्रथम वे नारी हैं। नारी - हृदय की कोमलता, सरसता, तल्लीनता उनके प्यार में अभिव्यक्त हुई है। उनके प्रेम में नारी की विवशता, तीव्रता, मधुरता तथा सात्विकता स्पष्ट लक्षित होती है। गोपियों के हृदय में उमड-घुमडकर आये हुए भावों की अभिव्यक्ति अत्यंत सहजता एवं सुन्दरता के साथ हुई है।

अनुभूति, कल्पना, सूक्ष्मदर्शिता और संगीतमय प्रवाह के कारण नंददासजी की शृंगार विषायक मर्मज्ञता का परिचय आसानी से मिलता है। नंददास की गोपियों की विरहानुभूतियों की तीव्रता पाठक के मर्म को छूने में पूर्णत: सक्षम बनी है।

नंददास और सूरदासजी की गोपियों की तुलना दृष्टि से देखा जाए तो नंददासजी की गोपियाँ सूरदासजी की गोपियों से कई बातों में सरस हैं। दोनों भी कवियों ने अपनी गोपियों के द्वारा ज्ञान मार्ग का खण्डन और प्रेम मार्ग का मण्डन किया है। दोनों भी कवियों ने इसके लिए `श्रीमद्भागवत` का आधार लिया है। शुद्ध दार्शनिकता की दृष्टि से नंददास का `भँवरगीत` सूर के `भ्रमरगीत` से अधिक महत्वपूर्ण है। आकार की मर्यादा के कारण नंददास ने सूर की गोपियों की तरह हृदय की अनेक दशाओं का चित्रण नहीं किया है; बल्कि अनुभावों के माध्यम से प्रेम की उत्कटता का चित्रण अवश्य किया है। नंददासजी की गोपियाँ वाक्चातुर्य से पूर्ण बुद्धिवादी नारियाँ हैं। वे प्रेम-विदग्ध हृदय से भी तर्क उपस्थित करती हैं। यह तार्किकता सूर की गोपियों में नहीं है। सूरदासजी की गोपियों की अपेक्षा नंददासजी की गोपियों ने पुष्टिमार्गीय भक्ति का स्वरूप अत्यंत स्पष्टता से अभिव्यक्त किया है। वियोग में संयोग मान लेने की नंददासजी की कल्पना सभी भ्रमरगीतकारों से अलग तथा नवीन है। इन सब विशेषताओं के कारण नंददास का `भँवरगीत` और उनकी गोपियाँ संस्मरणीय एवं अविस्मरणीय हैं।